स्थापन दिवस के 25वें वर्ष में प्रवेश

संयम • संस्कार • सन्तुलन

शहर समता

शोध पत्र

'कर्मक्षेत्र रणभूमि यही है, मानव हो तुम कर्म करो।
कर्म से कभी विमुख न रहना, मन में यह संकल्प करो।'-
उमेश श्रीवास्तव

(हिंदी साप्ताहिक)

संस्थापकः स्व0 कन्हैया लाल,
स्व0 श्रीमती साधना श्रीवास्तव

महिला काव्य गोष्ठी विशेषांक

सम्पादकः उमेश चन्द्र श्रीवास्तव

www.shaharsamta.com

अंक 33 पृष्ठ 32 वर्ष 25

रविवार, इलाहाबाद, 4 जनवरी 2026

R.N.I.- UPHIN/2001/3996 ISSN- 2581-6128

काव्य जगत की सुंदर बातें ,
प्रकृति सरोवर की सब रातें ।
कितनी सुंदर लगतीं हैं ,
अर्थ जगत से तोड़-तोड़ कर ।
लिख जाती मनोहरी सांसे ,
इसका क्या है मोल ।
तोल - तोल कर लिख डालो ,
तुम जग की सारी संघातें ।

तो बात हो रही है महिला काव्य गोष्ठी विशेषांक की । सरस भाव से लिखी गई इस विशेषांक की सभी कविताएं भाव-भक्ति - ऋतु की भावनाओं से ओतप्रोत हैं।

लगातार काव्य गोष्ठी का यह सिलसिला शहर समता विचार मंच की सभी रचनाकारों द्वारा कही और लिखी जा रही है । जिसमें से भविष्य में बहुत सी मणियां निकलेंगी , जो समाज और काव्य जगत में अपना निश्चित ही एक मीनार गढ़ेंगी , सरल भाव की सुंदरतम कविताओं से लबरेज इस विशेषांक से कुछ कविताओं की बानगी देखिए

पहली बानगी

अंधियारे मन के कोनों में,
थोड़ी सी रौशनी लाएं,
भूले सपनों की पगडंडी पर,
आओ फिर से दिया जलाएं।

दूसरी बानगी

पहले मनाऊं गणपति भगवान
रिद्धि सिद्धि के संग आएं
शीश नवाऊंगी शारदा मैया
ज्ञान और बुद्धि भंडार अपार!

तीसरी बानगी

मंजिल को पाना है तो, निकल सफर पर,
कठिन होगी राह, कांटों भरी,
पैरों में छाले होंगे,
मगर ये दिन ही तुझे, सँवारने वाले होंगे।।

कविताओं पर आधारित यह महिला काव्य गोष्ठी विशेषांक आपको कैसा लगा, प्रतिक्रिया अवश्य दीजिएगा ।

अंत में-

लिखो तुम लगन से,
मनोभाव मन से ।
मिलेगा बहुत रस,
लिखो तुम अगन से।

- उमेश श्रीवास्तव

शहर समता

कविताएं

'दीपोत्सव का बधाई संदेश'

श्री चित्रगुप्त जी के वंशज हैं हम सदैव कलम की ताकत का महत्व है समझना।

धैर्य,साहस, मेहनत,लगन,
सही दिशा और प्रतिभा रखना,
कभी भी बुझने न देना उम्मीद का दिया।

भले ही हो तुममें थोड़ी सी निराशा,
चारों तरफ फैला हो थोड़ा सा अंधेरा।

हम लोगों में जिंदा रखें उम्मीद का दिया,
भूले बिसरों को सही दिशा दें सरीखे सा दिया।

हरेक के भाग्य में हो कुछ न कुछ रोजगार,
साथ में हों इंतजाम रोटी,कपड़ा और मकान।
बिछुड़े न कभी कोई परिजन मित्र हमेंशा,
ईश्वर के साथ ही सबकी दुआ रहे हमेशा।

चाहे हो कितनी बड़ी से बड़ी समस्या,
भारतीयों में जले सदा भातृत्व का दिया।

शत्रु कितनी ही कुटिल चाल चलता रहे सदा ,
सर्वोत्तम उदाहरण बनें भारतीयों की सम्प्रभुता , एकता, व अखंडता ।

साधना खरे
हर्षवर्धन नगर, प्रयागराज

दीप जले सुख-शांति पाने के लिए

देश की समृद्धि को बढ़ाने के लिए,
एकता अखंडता को पाने के लिए,
विश्व को यशस्वी बनाने के लिए,
दीप जले सुख- शांति पाने के लिए,

गृह- गृह दीपों की कतार सजेगी,
कण - कण में माँ लक्ष्मी की ज्योति जलेगी,
रोग - शोक ताप को भगाने के लिए,
दीप जले सुख- शांति पाने के लिए ।

कोना- कोना देश का प्रकाशमान हो,
हिंदू- हिंदी हिंद का भी खूब मान हो,
राग - द्वेष दंभ को मिटाने के लिए,
दीप जले सुख- शांति पाने के लिए,

रवि - शशि जब तक द्युतिमान हों,
सारे विश्व में सनातन का सम्मान हो,
उर की ड्योढी पर अल्पना सजाने के लिए
दीप जले सुख शांति पाने के लिए।

पावन -पुनीत सभी आचरण करें,
भूषण का रूप सभी दूषण धरें,
चाटुकारिता को सुलझाने के लिए,
दीप जले सुख- शांति पाने के लिए,

जीवन सभी का ज्योतिर्मय हो,
उर से अज्ञानता का क्षय हो,
वसुधा को स्वर्ग बनाने के लिए,
दीप जले सुख- शांति पाने के लिए

अनामिका तिवारी ' अन्नपूर्णा '

मेरे राम

पूजते हो राम को
पर राम जैसे बनते नहीं।
जपते हो राम नाम को
पर क्यों उन्हें समझते नहीं।

मात- पिता के प्यारे थे वो
प्रजा के दुलारे थे वो।
गुणशील हमारे राम थे ।
मर्यादा- आदर्श की खान थे।

पितृ वचन की खातिर राम ने
राज पाङ्ग ड्डुकराया था।
मानव कल्याण हेतु वन में
दानवों को मार गिराया था।

भ्राताओं से प्रेम की
जिसकी कोई मिसाल नहीं।
मित्रता निभाने वाला
उन जैसा कोई लाल नही।

आताताथी रावण ने
माँ सीता का अपहरण किया।
मार दुष्ट रावण को
सीता का मन से वरण किया।

प्रजा की सन्तुष्टि हेतु
प्रिय पत्नी का त्याग किया ।

दिल पर पहुंची ठ्ठेस पर
समक्ष औरों के न मलाल किया ।

दिल मे धर कर राम को
चरित्र उनका याद करो
चल कर उनकी राह पर
अपनी एक पहचान बनो।।

दया शर्मा
शिलांग (मेघालय)

आओ फिर से दिया जलाएँ

अंधियारे मन के कोनों में,
थोड़ी सी रौशनी लाएं,
भूले सपनों की पगडंडी पर,
आओ फिर से दिया जलाएं।

टूटी हिम्मत, बिखरे अरमान,
थोड़ी सी आस जगाएं,
थमी हुई साँसों के संग-संग,
जीवन में रंग भर लाएं।

नफ़रत की दीवारें गिरा दें,
प्यार के दीप सजाएं,
मिट्टी की खुश्बू संग हँसते,
आओ फिर से दिया जलाएं।

अनीता दुबे

'करवा चौथ की महत्वता'

हे मां तेरे चरणों में हम शीश नवाते हैं,
तेरे चरणों से छुआ कर सिंदूर
अपनी मांग में लगाते हैं
और मां तुमसे ,
अखंड सुहाग का आशीर्वाद पाते हैं।
रिश्ता पति-पत्नी का बड़ा ही प्यारा है,
ना कभी हो एक दूसरे पर अविश्वास,
ना हो भ्रम की गुंजाइश,
यह है ऐसा रिश्ता जिसमें
ना कोई जीता ना कोई हारा है।
देती है हर पत्नी यही दुआ,
करो तुम उन्नति दिन
रात और तरक्की तुम्हारी चौगुनी बढ़ जाए
करती हूं आज तुम्हारे लिए व्रत,
भगवान करे तुम्हें हमारी उमर लग जा

पुष्पा सिंह
कानपुर

करवा चौथ

कितना सुन्दर चांद गगन में।
गोरी भी सजी निराली थी।
भरी हुई हाथों में मेहंदी।
खुश्बू मन हरने वाली थी।
वही दमकती बिंदिया माथे।
मांग भोर की लाली थी।
मां करवा चौथ तेरी अस्तुति से।
अमर सुहाग की थाली थी।
पूजा अर्चन करुं हमेशा।
सदा बनी रहे जोड़ी मां।
हर चंदा में पिया हमारे।
वर यही मांगने वाली थी।

संतोष मिश्रा दामिनी
प्रयागराज

निहारती प्रिय साथ मे

अर्क देती प्यार से,
मेहदी लगे दो हाथ ये।
चाँद खिड़की झाँक के,
निहारती प्रिय साथ में।

आज मैने ब्रत रखा ,
निराजल हूँ हे प्रिये।
उम्र तेरी माँगती हूँ,
सौ वर्ष तू और जिये।
सुहाग मेरा अमर रहे,
संवारती श्रंगार मैं।
चाँद खिड़की झाँक के,
निहारती प्रिय साथ में।

दीवार पर करवाँ लिखूँगी,
और कहूँगी कहानियाँ।
श्रंगार मै सोलह करूँगी,
यह प्यार की निशानियाँ।।
सुहाग सिन्दूर माँग भरे,
संवारती श्रंगार मैं।
चाँद खिड़की झाँक के,
निहारती प्रिय साथ में।

चाँद सा प्रकाश लिए,
तुम सदा पास रहो।
चाँदनी बनू मै तेरी,
तुम सदा खास रहो।
सुहाग जोड़ा तन सजे,

संवारती श्रंगार मैं।
चाँद खिड़की झाँक के,
निहारती प्रिय साथ में।

रचना सक्सेना
प्रयागराज

चंदा मैं हूँ तुम पर वारी

चंदा मैं तो तुम पर वारी,
कर सोलह सिंगार में मतवाली,
एक ड्डगी ड्डगी सी राह निहारु।
चंदा मैं तो तुम पर वारी.....
छलनी करवा ले हाथों में,
कर आरती अर्घ्य दें तुम्हें पूजती,
युगल प्रेम दिप्त पगी रहूं,
सजी चांदनी सी।
चंदा मैं तो तुम पर .....
उम्र भर करूं तुम्हारा पूजन,
हरा भरा रहे मेरा घर आँगन,
करती हूं तुमसे विनती गूंजे सदा किलकारी,
चंदा में तो तुम .....
कर जोड़ यही है विनती,
कोमल पल्लव ललित निखरती,
प्रेम प्रसून खिले,
अमर प्रेम की बेल सी अखंड सुहागन रहूँ।
चंदा मैं तो तुम पर ...।

उमा मिश्रा

माँ लक्ष्मी मेरे घर आओ ।

माँ लक्ष्मी मेरे घर आओ ।
आकर माँ तुम कभी न जाओ ।
भक्त हृदय में जोत
जलाओ ।
घोर अँधेरा दूर भगाओ ।।

अष्ट रूप लक्ष्मी के जानो ।
घर आना माँ का पहचानों ।।
धन लक्ष्मी का रूप निराला ।
घर बन जाए सुन्दर आला ।।

धीरा लक्ष्मी धान्य बढ़ाए ।
खलिहानों मे सुख लहराए ।।
ज्ञान लक्ष्मी बुद्धि प्रदाता ।
ज्ञानवान मानव सुख पाता ।।

संतति लक्ष्मी घर सुत लाए ।
संतति सुख पा मन हरषाए ।।

शहर समता

विजय लक्ष्मी सफलता लाए ।
अरि बाधा सब दूर कराए ।।

वैभव लक्ष्मी पुलकित करती ।
घर-घर में सुख सागर भरती ।।
कङ्गिन समय में साथ निभाए ।
साहस लक्ष्मी सब सुख लाए ।।

डॉ कुमकुम शुक्ला
जबलपुर

महक जाते तन-बदन में,

महक जाते तन-बदन में, प्रेम की बेली लता।
पात पाती पूछ जाती, अब बता पिय का पता।।
बादलों को संग लेकर, झूमती काली घटा।
घेर लेती है हवाएं, पंख अरमानो कटा।

चाँदनी की रात में जब, मीत हो बस संग में।
देख लो हम रंग जाये , प्रीत के ही रंग में।।
नेह से धागे पिरोये, प्रीत मोती प्यार के।
प्रेम सागर ले हिलोरें, नैन है पतवार के।।

मैं सजाती पुष्प कलियाँ, चाँद झाँके द्वार में।
रत्न मोती डाल सुंदर, नेह साजे हार में।।
दीप बाती थाल लेकर, आरती हो प्रीत से।
दे दुआएं आज भगवन, नेह बरसे मीत से।।

सिद्धेश्वरी सराफ 'शीलू '

करवा चौथ

पहले मनाऊं गणपति भगवान
रिद्धि सिद्धि के संग आएं
शीश नवाऊंगी शारदा मैया
ज्ञान और बुद्धि भंडार अपार!

सुमिरन गौरा, शिव शंकर
सकल सृष्टि के सृजन हार
करवा चौथ की कथा सुनो
हाथ धरो अक्षत लो चार !

सात भैयन की लाडली बहना
उजाला रूप करती सिंगार
घर आंगन की प्यारी गहना
छाया घर में हर्ष अपार !

माथे बिंदिया मांग में सिंदूरा
कान में झुमका नाक नथुनी

शहर समता

गले में हरवा मंगल सूत्र
हाथ में कंगन रची है मेहंदी

पैरों में पायल लाल महावर
लहंगा साड़ी लाल चुनरिया
सजी-धजी पूजा की थाली
बनी हुई प्रिय की जोगणिया !

भोजन करने बैङ्गे जब भैया
बहन को दई टेर लगाय
आओ बहन जेवन कर लो
भूख लगी ना करो अबार!

बहन बोली सुनो मोरे भईया
तुम सब मिल पारण कर लो
हमने धरो करवा चौथ उपास
अबे चांद नहीं आओ आकास!

सातों भैया बैङ्ग कर विचारे
बोलो अब का करें प्रयास
छलनी में दिया धर लओ
पेड़ की ओट से करो प्रकास!

आओ बहना पूजन कर लेओ
देखो चंदा अर्घ्य देओ चढ़ाए
जल्दी पूजन करके झटपट
बैङ्गी भोजन थाली के निकट!

पहले कौर में बाल निकरो
दूजे कौर में कंकड़ निकरो
तीजे कौर माखी गिर गई
पति बीमारी की खबर आई!

निकली ससुराल जा न को
मैया ने मोहर दई थमाई
अटल सुहाग आशीष दे
उसको देना मोहर निकाल!

रास्ते में सब आशीष देते
कर्मा वाली जीती रह वे
सात भैया की बहना जीवे
करवा माता द्वार खड़ी थी!

हाथ जोड़कर माफी मांगी
करवा माता भई उदार

पैर छुए आशीष ले लिया
मां कृपा पति जीवित पाए!

मां की कृपा जो सुने सुनावे
जन्म जन्म अति सुख पावे
अखंड सौभाग्य अक्षय समृद्धि
पति का संग मिलेअपरिमित!

करवा की महिमा माता जाने
हमने तो सिर्फ कोसिस कर लई
साधना सुकुल ने कथा सुना दई
भूल चूक सब करियो माफ!

मंशा पूरन करियो मां आप
करवा माता की जय बोलो !

डॉ साधना शुक्ला
भोपाल मध्य प्रदेश

राम गीत

रामा आए गईन अजुध्या नगरिया मां
देवता फूल बरसावे हो डगरिया मां.....2

चौदह बरस से सूनी अयोध्या
निस दिन बाट निहारे
कब आहैं मोरे राम लला
फिर कब हुई हैं उजियारे

रामा आए ....!
देवता फूल बरसावे......2

धरे खडाऊं सिंहासन पर पे
भरत प्रतीक्षा रत हैं
तब ही मिली सूचना
भैया राम अवध आवत हैं
रामा आए गईन.......!
देवता फूल ....!

पुष्पक विमान आवत देखा
मन हो गया अधीरा
राम सिया लछमन भी आए
संग में हनुमत बीरा

रामा आए गईन.........!
देवता फूल..............2

पुरी अयोध्या जगमग जगमग
जग में हुई दिवाली
कोऊ बजावे ढोल मंजीरा
कोऊ बजावे ताली
रामा आए गईन .....!
देवता फूल ....! 2

तीनों माता करें आरती
गुरु जन स्वस्ति उचारें
सारे परिजन लेंय बलैया
पुरजन नजर उतारें
रामा आए ....!
देवता फूल ....! 2

गलियन गलियन दीप सजे हैं
हर घर बजे बधाये
सबहि प्रजा आनंद मगन है
उत्सव रहे मनाये
रामा आए ....!
देवता फूल ....! 2

पूछ रहे हैं सभी राम से
कैसे दिन ये बिताये
कैसे तुमने रावण मारा
सब राक्षस निपटाये

रामा आए..............!
देवता फुल............! 2

सुनी राम की शौर्य कथा
तब सब मन में हर्षाये
वानर भालू उछल उछल कर
जय श्री राम सुनाये

रामा आए..............!
देवता फुल............! 2

गुरु वशिष्ठ ने दिया महुरत
राज तिलक की बारी
रामराज्य तब हुआ देस में
परजा भई सुखारी

रामा आए ....!
देवता फूल ....! 2

राम राम जय राजा राम
राम राम जय सीता राम 4

राम॑ राम॑ राम
जय श्री राम

डॉ साधना शुक्ला

स्वयं दीपक बनो

स्वयं दीपक बनो, जग को रोशन करो,
सजाओ पूजा की थाली है....,।
दीप बनकर बिखेरों उम्मीदो की रोशनी,
लक्ष्मी मां धन बरसाने वाली है ..।

जगमग जगमग दीप जलाओ...,
रोशनी लगती कितनी प्यारी है।
हर मन में करुणा जगाओ..,
खुशियों वाली आई दिवाली है।

हर एक की झोली में ,खुशियां भरने वाली है,
मां लक्ष्मी के पूजन, की घर-घर होती तैयारी है।
धन धान्य भरा रहे सबका,मां आशीर्वाद देने वाली है,
इनके पूजन से, सभी की दिवाली शुभ होने वाली है।

दीपों का उत्सव प्यारा ,रोशनी फैलाने वाली है,
मन के अंधेरों को दूर कर,
प्यार जगाने वाली है।
आज आई दिवाली , तकदीर बदलने वाली है,
मां लक्ष्मी की कृपा से, धन वर्षा होने वाली है।

प्रकाश पर्व है दीपावली...,
घर घर फैली खुशिहाली है...।
मिलजुल कर त्योहार मानाओ,
हर घर आंगन सजी रंगोली है।

रंजना बिनानी काव्या
गोलाघाट असम

अंधेरों से लड़ने का संदेश

अंधेरों से लड़ने का संदेश लाती दीवाली,
हर दिल में उजियारा भर जाती दीवाली।

दीपों की पंक्तियाँ जब मुस्काएँ आँगन में,
लगता है खुद खुशियाँ उतर आई जीवन में।

माँ लक्ष्मी के चरण पड़े जब घर-द्वारे,
सुख-समृद्धि बरसे जैसे सावन के झोरे।

शहर समता

मिठ्ठास घुली है हर रिश्ते की बातों में,
रोशनी सी खिली है सबके हालातों में।

चलो जलाएँ प्रेम का दीप हर दिल में,
फैलाएँ उजियारा इस प्यारे जग में।

अफ़रोज़ अज़ीज़
दिल्ली

जलाएँ दिए हम नेह के ऐसे

जलाएँ दिए हम नेह के ऐसे'
धारा का अंधेरा कहीं डूब जाए

ज्ञान का हो चहुँ ओर बसेरा
सुख सूर्य का हो रोज सबेरा
जलाएँ दीप साक्षरता के ऐसे
घर-घर हो खुशियों का उजेरा।।

आशा की स्वर्णिम बाती बनाकर
प्रेम-प्रीत का दीये में तेल भरकर
जलाएँ दीप सद्भावना के ऐसे
नफरत - ईर्ष्या दूर भाग जाए ।।

ज्ञान का सुरभित ऐसा प्रकाश
उन्नतिशील देश का हो विकास
जलाएँ दीए सत्कर्म के हम ऐसे
अकर्मण्यता-द्वेष दूर भाग जाए।।

दिया जो जला है, जला ही रहेगा
तूफानी हवा में अविचल जलेगा
चलाएँ पतवार विश्वास की ऐसे,
अशांति -हताशा सब दूर हो जाए।।

आशा जाकड़

दीपक

महिने भर तैयारियाँ, लिपे पुते घर द्वार।
पूजन होता रोशनी, ज्योतित दीप कतार।।

होता हर त्यौहार में, बच्चों को उल्लास।
दीपक लेकर हाथ में, करते तम का नास।।

दीप जलाकर प्रेम का, करें दूर अँधियार।
दीपक आभा से करें, तम पर नित्य प्रहार।।

नई रोशनी खा गई, दीपक का विश्वास।
रिश्तो में है गाँठ अब, खोए सभी मिठ्ठास।।

पुलकित उर की साधना, दीपक पावन द्वार।
आभा ऐसी दीजिए, जगमग हो संसार।।

उमा मिश्रा प्रीति

दीपावली है आई

दीपावली है आई सज गया बाजार,
पर गरीबों के लिए होता कहां त्यौहार।
भागे सब पीछे आधुनिकता के ,
पुरानी चीज अब कहां रहे।
विदेशी सामानों की लूट मची,
स्वदेशी सामानों से दूरी है बनी।

दिए की जगह ली मोमबत्ती ने,
मिठ्ठाई से भी परहेज है।
चाकलेट अगर मिल जाए तो ,
उसकी खुशी कुछ और है।

पर क्या किसी ने सोचा कुम्हार को,
दिन रात जो मेहनत करता है।
दूजे घर रोशनी भरने को,
रात भर सोचा करता है।

उसकी मेहनत को अब क्यों हम,
बेकार ही जाने देते हैं।
अपना घर करते हैं रोशन,
घर उसके अंधेरा करते हैं ।

तो आओ आज ही शपथ खाए ,
विदेशी चीज छोड़ स्वदेशी अपनाएं।
मोमबत्ती की जगह दीया जला कर के,
सबका घर रोशन कर जाएं ।

श्रद्धा श्रीवास्तव

दीप जलाओ

सब मंगल गाओ,
दीप जलाओ, रामलला के आने पर।
अब खुशहाली, दे दे ताली,
नाच रहे हैं गाने पर।।
दिनकर उजियारा, मस्तक सारा,
आलौकिक रवि किरणों से।
मन आज बावरा, देख रावरा,
हटे नहीं है चरणों से।

गूंजे जयकारा, राघव प्यारा,
है आज घड़ी सुखदाई।

श्री राम पधारे, आकर द्वारे,
दर्शन प्रभु के फलदाई।
सब मंगल गाओ, खुशी मनाओ,
छप्पन भोग लगाओ रे।
अब खत्म प्रतीक्षा, मिटी तितिक्षा,
मोहक रूप सजाओ रे।।

अनुराधा गर्ग दीप्ति
जबलपुर

फायकू

दीपावली पर्व पर लिखे
कुछ फायकू, सखे !
तुम्हारे लिए।।

सुंदर पर्व दिवाली आया
चहुंओर खुशियां लाया
तुम्हारे लिए।।

जगमग जगमग जलती झालर
कहीं लटकता झूमर
तुम्हारे लिए।।

धनतेरस पर सजी दुकाने
सबको लगीं लुभाने
तुम्हारे लिए।।

दादी झाड़ू, मम्मी चम्मच,
बिटिया गुड़िया लाई
तुम्हारे लिए।।

दादा लाए बताशे खील
पोता लाया कंडील
तुम्हारे लिए।।

पापा की जेबें खाली
ऐसी मनी दीवाली
तुम्हारे लिए।।

मिट्टी के दिए जलाओ
मत चाइनीस लाओ
तुम्हारे लिए।।

बम पटाखों की लड़ी
मुनियां घुमाए फुलझड़ी
तुम्हारे लिए।।

शब्द सम्पदा

आओ मिलकर दीप जलाएं
खील बताशे लाएं
तुम्हारे लिए।।

सबने मिलकर दीप जलाए
खील बताशे खाए
तुम्हारे लिए।।

पूजो लक्ष्मी और गणेश
बन जाओगे धनेश
तुम्हारे लिए।।

परदेहरी भी दीप जलाओ
सद्भाव सन्देश फैलाओ
तुम्हारे लिए।।

सब करें यही दुआ
न खेलें जुआ,
तुम्हारे लिए।।

दुर्व्यसनों को दूर भगाएं,
तभी दीवाली मनाएं,
तुम्हारे लिए।।

दीपावली सबसे सुंदर त्यौहार
मनाए सारा संसार
तुम्हारे लिए।।

तन मन स्वच्छ करूं
ज्ञानदीप सर्वत्र धरूं
तुम्हारे लिए।।

दीपावली पर्वः अतीव शुभमस्तु
सर्वत्र सुखशान्तिः भवतु,
तव निमित्तम् ।।

डॉ. सारंगादेश 'असीम'
धामपुर /हरिद्वार

शब्द समता

दीपोत्सव

दीपोत्सव की रात है,
जगमगाई है दुनिया सारी।
दीपों की रोशनी में, छाई हैं खुशियाँ सारी।

दीवाली की धूम में, हर घर - घर में है रोशनी,
लोगों के दिलों में,

प्यार और उमंगें की है बोधनी।

दीप जलाए जा रहे, हर घर में है आरती ,
खुशियों की रोशनी,
हर एक के दिलों में फैल रही।

लक्ष्मी पूजा की बेला, हर घर में पूजा हो रही,
धन और समृद्धि की,
कामना सबकी पूरी हो रही।

दीवाली की रात में,
सबके दिलों में प्यार भरा है,
इस त्योहार की खुशी,
सबके हृदय में छा रही।

दीपोत्सव की रात है, जगमगाई है दुनिया सारी,
दीपों की रोशनी में, झूम रहे प्राणी सारे।

दीवाली की शुभकामनाएं, सबको देती हूँ मैं,
इस त्योहार की खुशी,
सबके दिल में बसी रहे।

हर घर में दीप जले,
हर दिल में खुशी हो अपार,
दीवाली की रात में, सबके दिल में प्यार हो।

दीपोत्सव की रात है, जगमगाई है दुनिया सारी,
दीपों की रोशनी में, छाई हैं खुशियां सारी।

सुनीता गुप्ता

दिपावली

चमका घर ,
आँगन भी चमका
दिपावली त्योहार
आने से
मन हर्षित हो छनका ।।

आपसी प्रेम के दिये जलेंगे
बिछड़े मन फिर से खिलेंगे
बच्चों की किलकारी से
गूंजेगा घर आँगन
दिवाली आई है
होगी माँ लक्ष्मी का शुभ आगमन ।।

तरह तरह के व्यंजन बनेगा

शब्द सम्पदा

घर आँगन दलान सजेगा
बडे बूढे सब होगे उत्साहित
जब होगा प्रेम हर दिल मे समाहित ।

पटाखे फुलझडी चकरी और मोमबती
माँ भाभी जीजी और उनकी सखी
माँ लक्षमी की कर रही अराधना
माँ रही रिश्तों की मिठ्ठास रूपी धन
दिये की खुशबू सा महके हर रिश्ता
सत्य की रौशनी से भर जाए
'अर्चना' का मन ।।

अर्चना झा 'अन्नू'

हर एक शाम चाँद से जो बात होती है

हरेक शाम चाँद से जो बात होती है,
सभी स्मृतियाँ मन को अश्रु से भिगोती हैं।

कभी ये चाँद बिना बात मुस्कुरा देता।
कभी सौ - सौ सवाल साथ बना दृढ़चेता।।
मेरी सौगात प्रेम की है चाँदनी के लिए।
बिन इक दूजे के कोई रात भी न होती है।।
हरेक शाम,,,,,

कल शरद का ये चाँद कर रहा था ये चर्चा।
ऋतु आहट पे मुस्कुराओ कब लगे खर्चा।।
बदल रहें सभी अपने यहाँ भी फितरत से।
मगर ये चाँदनी तो चाँद बिना रोती है।।
हरेक शाम,,,,,

उजाले की भी कड़ी धूप अँधियार लगे।
हमें तो सबसे प्यारी अपनी चन्द्र यारी लगे।।
हमारे स्याह और सफेद सभी ख्वाबों में।
चाँद का रंग ही उर को मेरे सुहाती है।।
हरेक शाम,,,,,

मेरा ये चाँद शाम लम्हें कुछ चुराता है।
चाँदनी को निरख-निरख के गुनगुनाता है।।
ऋतु दिन कोई भी हो चाँद बिन न रह सकती।
चाँदनी चाँद के संग-संग ही चला करती है।।
हरेक शाम,,,,

डॉ0(कु0)शशि जायसवाल,
प्रयागराज, उत्तर प्रदेश।

चाँदनी रात में

चाँदनी रात में आपके साथ में,

रेत पर नाम लिखते मिटाते रहे।।

रात बढ़ती रही ओस झरती रही।
वेदना की तपन शीत हरती रही।
हाथ में थाम कर हाथ बैठे रहे,
यामिनी चाँद से बात करती रही।

आप सुनते रहे हम सुनाते रहे।
रेत पर नाम लिखते मिटाते रहे।।

चढ़ रही थी खुमारी छलकते नयन।
आप आगोश में वो सरकते अयन।
कैद करता रहा आज मन हर घड़ी,
आस में थे कटे वो सिसकते रयन।

आपबीती दिलों की बताते रहे।
रेत पर नाम लिखते मिटाते रहे।।

मिल गए हो कभी दूर जाना नहीं।
प्रीत की रीत को अब निभाना सही।
प्यार से रंग कर जिंदगी को कभी,
फिर तिमिर से नहीं यूँ सजाना मही।

प्रेम के गीत हम गुनगुनाते रहे।
रेत पर नाम लिखते मिटाते रहे।।

सीमा वर्णिका,
कानपुर

जिंदगानी की खुशी है आपसे

मुस्कुराते आ रहे हो सामने।
यूं लगा आए मुझे हैं थामने।
जिंदगानी की खुशी है आपसे।
साँस मेरी चल रही पद चाप से।

थाम लेना गर गिरूं मैं राह में। चैन आएगा तुम्हारी बाँह में।
हो रही गुलजार गुलशन में सनम।
चाहे तेरी है मुझे सातों जनम ।।

प्रीत में डूबी रहे हर बात यूँ।
ये सुहागन सज रही हो रात ज्यूँ।
पास मेरे तुम रहोगे ये पता।
है दिया जग को हमीं ने ये बता।।

मुस्कुराने का बहाना चाहिए।
साथ अपना हर कदम दिलवाइए।
पास रहना दूर तो मत जाइए।

आज मेरी बात को अब मानिए।।

मुस्कुराने का बहाना चाहिए।
साथ अपना हर कदम दिलवाइए।
पास रहना दूर तो मत जाइए।
आज मेरी बात को अब मानिए।।

अनुराधा गर्ग दीप्ति

करवा चौथ गीत

लाल जोड़े में सुंदर सुहागन लगे
भाव अरमानों के आज सारे जगे...

माथे बिंदी के संग, सोहे कुमकुम छवि
कोई उपमा न मिल पाए सोचे कवि।
हाथ मेंहदी रची लालिमा मोहती
जोड़ी दोनों की सुंदर सदा सोहती।।

आलता से सजे पैर पायल पगे
लाल जोड़े में सुंदर सुहागन लगे...

चाँद को देखकर, पूजा उसकी करूँ
धीर खोने लगा चाँदनी को वरूँ।
हाथ में करवा ले, जल दिया चाँद को
दर्श चलनी से फिर कर लिया चाँद को।।

प्रेम होवे अमर सात जन्मों सगे
लाल जोड़े में सुंदर सुहागन लगे...

छाया सक्सेना प्रभु
जबलपुर (म.प्र.)

कार्तिक कृष्ण पक्ष चतुर्थी तिथि

कार्तिक कृष्ण पक्ष चतुर्थी तिथि
आया करवाचौथ का त्योहार।
आओ सुहागन बहनों
आज करले सोलह श्रृंगार।
सुहागन पति की लम्बी आयु के लिए
गणपति चंद्रमा और शिव पार्वती
का करती पूजन।
पति पत्नी के प्रेम का प्रतीक
सुंदर भावों से भरा
जहां है त्याग तपस्या और समर्पण।
मिले पिया से प्रेम और विश्वास का उपहार।
दिनभर निर्जल निराहार रहकर
करती कामना सुख समृद्धि
और पति के कल्याण की
यही वरदान मांगती सदा

प्रभु रक्षा करना पिया के प्राण की
इस व्रत उपवास से मिले
हमको सुंदर सुखी संसार
सावित्री सीता जैसे सातियों की
ये धरती है अति पावन
विवाह जहा सुंदर संस्कार
और है ये पवित्र बंधन।
दिल बस चाहे यही
रहे सलामत सजना मेरा
और सजना का प्यार।

श्रीमती रेणुका पटेल
भिलाई नगर

करवाचौथ

आया करवाचौथ सखियों में रंग लाया ,
संग सखियों में उमंग छाया त्
हाथों में मेहंदी ,पैरों में बजे पाज़ेब ,
खनके कंगना, मांगें अखंड सौभाग्य त्
हृदय में उमांगता भरे , लिए उल्लास ,
नयनों में स्वप्न संजोए हैं खास त्
सज धज कर लगी सखियां निराली ।
करवा के संग बाजारों में रौनक छाई ,
सजी कहीं चूड़ियां तो , कहीं करवा की दुकानें ।
लग गई ब्यूटी पार्लर में सजने संवरने की लाइनें ,
ऐसा लगता मानो आसमां से उतर आईं परियां ।
संग अपने जीवन साथी की लेती बलियां ,
घर आंगन को महकाती देती खुशियां ।
हर क़दम पर आगे बढ़ कर देती साथ ,
हो कोई भी मुश्किल नहीं छोड़ती हाथ ।
अपने घर आंगन को स्वर्ग बनाती ,
अपने से पहले सबको प्यार लुटाती ।
जन्मांतर के साथी की रक्षक बन अपना सर्वस लुटाती ,
दिल से अपना फ़र्ज़ निभाती ।
निराहार और प्यासी रहकर पूजा करती ,
प्रथम गणपति वंदन कर करवा चौथ की कथा पढ़ती ।
चांद को अर्घ देकर अपने पति के हाथों से जल ग्रहणती,
मन से पवित्र रहकर हर पूजा है स्वीकारी जाती।
कहे हंसा सज धर कर सखी हो गई मैं तैयार ,
कर रही मैं वंदन, चंदा निहारूं बार बार ।
सभी सखियां संग मिल, मैं मांगूं ये आशीष सदा ,
जन्मों का न साथ छूटे ऐसा वर देना सदा ....

डा.योगिता सिंह 'हंसा'
(कानपुर)

करवा चौथ

सज धज कर दुल्हन सी नारी,

हाथों में मेंहदी, सजे कंगन भारी।
सिंदूर की रेखा, मंगल की छवि,
करवा चौथ लाया प्रेम की लहर नवी।।

भूख-प्यास सब भूल गई वो,
श्रद्धा में डूबी, मन फूल गई वो।
चाँद से पहले थाली सजाए,
पिया के नाम व्रत निभाए।।

जब झाँके चाँद छलकते जल में,
देखे पिया का चेहरा पल में।
मुस्कान बिखरे प्रेम की रेखा,
पूर्ण हो व्रत, पूर्ण हो देखा।।

बंधन यह स्नेह का पावन,
जनम-जनम का हो सावन।
करवा चौथ का यह उत्सव प्यारा,
पति-पत्नी का अटूट सहारा!!

अनीता दुबे

तेरे नाम का चाँद

तू दूर सही, पर दिल के क़रीब है आज भी,
मेरी साँसों में बसता तेरा नसीब है आज भी।

करवाचौथ की रात आई सजा के अरमान,
तेरे नाम का चाँद आसमान में करीब है आज भी।

सिंदूर की हर बूँद में तेरा ही अक्स झलके,
मेरी माँग में तेरी दुआ का नसीब है आज भी।

रूठे तो चाँद भी छिप जाए बादलों में कहीं,
तेरी मुस्कान में ही उजली तसवीर है आज भी।

नज़रें उठी जब आसमान की ओर कहीं,
लगता है तेरा चेहरा वही नसीब है आज भी।

पिया के नाम की लाली होठों पे सजती रहे,
तेरी चाह में जिए ये तदबीर है आज भी।

रखती हूँ व्रत तुझसे मिलने की आस लिए,
मेरे वजूद की हर धड़कन तेरा नसीब है आज भी।

सुनीता गुप्ता
कानपुर उत्तर प्रदेश

चाँद

करके सोलह श्रृंगार

चाँद को बोलूं बार बार
मोरा पिया है सबसे भला
चंदा काहे तू उससे जला ....

मैं उसकी सुहागन
वो है मेरा सुहाग
चाँदनी प्रिय है तुझको
ये है उसका सौभाग्य
अब क्यों तू मुँह बनाए भला
चंदा काहे तू उससे जला ...

ईश्वर ने बनाई है सबकी जोड़ी
चाँद को मिला है उसकी चकोरी
साजन मेरा हे परदेसी
मैं हूँ गाँव की छोरी
तेरी- मेरी मेल कैसे होगी भला
मेरे बिंद से तू काहे को जला ...

अर्चना झा अन्नू
दिल्ली

करवा चौथ

बेतहाशा चाहत किस वजह मै जानती नही,
कभी वो मुझसे, कभी मै उनसे झगडती क्यूँ
फिर भी कुछ पल में भूल जाती क्यूँ,
आखिर इस रिश्ते में, ऐसी दीवानगी होती क्यूँ.
सुबह से रात खिदमत मे दौडती आगे पीछे क्यूँ.
चौदहवी चाँद सा चेहरा मेरा नही, वो निहारे क्यूँ.
फिर भी आईने मे इक टक ढूढती उन्हें क्यूँ,
ना कभी बैङ्ग करे गुफ्तगू, शामो सहर तन्हाँ है.
वो अपने काम मे मशरूफ, लिप्त घर, गृहस्थी में मै हूँ, फिर उनकी नाराजगी, सर आँखों मे जाने लेती क्यूँ,
क्या रिश्ता करवा चौथ व्रत,रख भूखी, प्यासी रहती क्यूँ.
कुछ तो अलग है इकरारे वफा उनकी, जो मै उनपे मरती हूँ,
अंजान को सर्वस्व सौंपना आंसा तो नही सोचती हूँ.
माथे बिंदिया, मांग सिन्दूर,
पैर महावर उनके नाम की भरती हूँ.
बाल तजुर्बो से उनके,तो सफेदी मेरी उम्र का तकाज़ा हैं.
बेतहाशा चाहत दिन व दिन बढती हुई
एक दूजे पर देखती हूँ,
बढती उम्र मे उनका मुझपे, मेरा उनपे समर्पण देखती हूँ.
लेकिन है खूबसूरत अहसास,
जो चाँद करवा चौथ का बादलों मे ढूढती हूँ.
बेतहाशा चाहता किस वजह मै जानती नही हूँ.

आरती शर्मा
जबलपुर मध्य प्रदेश

जीवन की क्षणभंगुरता

क्षणभंगुर काया का बंदे,
काहे तुझे गुमान रे,
अगर हाट में आया है तो
ले ले कुछ सामान रे।

ईश्वर का तू अंश है प्यारे,
माया का है दंश यहां रे,
लोभ - मोह के चंच भगाके,
उर में प्रभु अवतंस बसा ले,

कर्मों की खेती से उपजे,
सारे सुकृत सुमान रे।
अगर हाट में आया है तो,
ले ले कुछ सामान रे।

इस दुकान के भाव बड़े है,
कर्म है खोटे चाह बड़े है,
झूङ्ग कपट के मान बड़े हैं,
प्रभुता के सम्मान बड़े है,

चाटुकारिता फन फैलाए,
विकल हुआ इंसान रे,
अगर हाट में आया है तो
ले ले कुछ सामान रे,

स्वारथ का है यहॉं झमेला,
मैं और मेरा तू और तेरा,
चार दिनों का है यह मेला,
फिर तो चला चली का रेला,

पीहर के दिन सुख के बीते,
अब जाना ससुराल रे,
अगर हाट में आया है तो
ले ले कुछ सामान रे।

लख चौरासी फिरकर आया,
बड़े भाग मानव तन पाया,
भ्रम ने आकर तुझे फँसाया
अब काहे का तू भरमाया,

दिव्य भक्ति के निर्मल जल से,
पावन कर ले धाम रे,
अगर हाट में आया है तो

ले ले कुछ सामान रे।

अनामिका तिवारी ' अन्नपूर्णा '
प्रयागराज

करवाचौथ के दो चांद

कल रात दिखा जो चांद आसमां
उसकी छटा निराली थी।
छन- छन के आती मधुर चांदनी
मन को बहुत लुभाई थी ।
एक सलोना चांद धरा पर
छटा उसकी मतवाली थी।
मोहे अमृत जल से तृप्त किया
मानो बरस भर प्यासी थी।
सफल हुआ मेरा व्रत माधो
कृपा यूंही बनाए रखना।
दोनों चांदों को सबके उपवन में
सदा यूंही सजाए रखना।

संगीता वर्मानी 'साध्या'
देहरादून,उत्तराखंड

करवा चौथ का चाँद

ऐ! चाँद तुम आसमान में दिख जाना।
बादल में मत छुपना जल्दी तुम आना।

पूरा दिन मैं भूखी प्यासी रह कर,
साजन के लिए करूँ सौलह श्रंगार।

मेंहदी रचा हाथों में कंगना पहने हाथ।
पूजा की थाल लिए और करवा साथ।।

अर्ध्य देकर पूजा चाँद को
मीठे से भोग लगाया।
धूप, दीप, नैवेद्य चढ़ा प्रभु का ध्यान किया।।

करवा चौथ का व्रत सुहागिन नारी रखती।
पति की लंबी उम्र की
प्रभु से कामना करती।।

चाँद निकलने पर
नारी पूजन चाँद का करती।
छलनी से पिया का दीदार फिर करती।।

व्रत तुड़वा पति मीठा पत्नी को खिलाते ।
जल पिला पत्नी का निर्जला व्रत तुड़वाते।।

सभी को करवा चौथ व्रत की

हार्दिक बधाई एवं शुभकामनाएं ।।

सुषमा सिंह उर्मि
कानपुर

सौभाग्य तुमसे है पिया

आओ सखी करवा चौथ पर,
करले सोलह सिंगार,
माथे कुमकुम पांव महावर,
पायलिया करे झंकार।
मेहंदी रंग लाई चूड़ी कंगन
खनके माथे सिंदूर सुहाए,
सदा सुहागन वर दो
गौरी मैया दिल की यही पुकार।।

पिया को झांकू चलनी दीपक
ले चांद को पहली बार,
गले मंगलसूत्र लाल चुनरिया
मैया तेरी कृपा अपार।
सदा सुहागन का वर दो मैया
सोलह श्रृंगार अमर रहे,
लंबी उम्र पिया की हो
ये वरदान दो मैया हर बार।।

करवा चौथ पर चांदनी रात
करते हैं प्रीत की बातें,
गजरा सजा के बालों में
करते हैं मनुहार की बातें।
सौभाग्य तुमसे है
पिया जीवन बगिया महके मेरी,
पावन प्रीत की बेला महके
बाहों में कट जाए राते।।

चरणों को माथे से लगा
मैं तो हुई साजन निहाल,
सात जन्मों का बंधन
तेरे बिन हुआ जीवन बेहाल।
तुमसे ही जीवन का सार
सुख दुःख के साथी हम,
धड़कन हो तुम दिल की
मेरे रखना हरपल खयाल।।

मंजू लता नागेश
प्रयागराज उत्तर प्रदेश

करवा का चंदा

आओ चंदा थाली में ,तुमको मैं शीतल देखूं।
लहराओ तुम जलनिधि में,

तुमको मैं स्नेहिल देखूं ।।
सिंदूरी मांग सजी और,
मेहंदी लगी है हाथों में ।
कंगना कलाई सजी और,
बिंदिया चमके माथे में ।।
उनकी छवि को देखूं ,दीप के उजाले में ।
प्रभु के आगे कर जोड़ूं ,
सुरमई रात के प्याले में।।
छलनी में दीप धरें ,जल का अर्चन मैं करूं।
सब सुखी रहे सुहागन, यही कामना मैं करूं।।
मां अलोपी मां ललिता ,मांग का लालित्य धरें।
सबके आंगन सजती छलनी,
कल्याणी कल्याण करें ।।
कहे त्रिधा देव चन्द्रमा,आरती में तुमको देखूं।
आओ चंदा थाली में तुमको, मैं शीतल देखूं।।

डा ऋतु पाण्डेय त्रिधा
प्रयागराज

मेरा चाँद मुझे आया है नजर

हम साथ रह जिम्मेदारियों में आगे बढ़ते हुए ,
अपनी नजदीकी की गहराई को न समझ सके !
जीवन की गाड़ी पटरी पर चलती रही ,
समय-असमय कर्मस्थली पर जाना-
जल्द लौटूंगा-इन शब्दों के सहारे प्रतीक्षा में रहना।
चिट्ठी न आए या लंबे अर्से तक खैर खबर न हो ,
टेलीफोन की घंटी का इंतजार पर सीमा क्षेत्रों में, खराब नेटवर्क के चलते --बात न हो पाना ,
फिर भी बेचैन मन से प्रतीक्षारत रह,
उस पड़ाव में दोनों का एक दूसरे केलिए ,
करवाचौथ के व्रत को दूर रहकर भी करना ,
जाने कितना मन को भावुक कर जाता ।
जीवन के इस पड़ाव पर आकर--
मेरा चाँद मुझे आया है नजर-अर्थपूर्ण होता गया।
यह और बात है , कि हमनें एक-दूसरे से,
कभी चाहत में प्रेम-शब्द का जिक्र ही नहीं किया,
फिर भी इस राह पर चलते चलते खट्टी मीठ्ठी यादें,
ओस से ज्यादा कोमल और खामोश आंसुओं में, छिपा कशिश कब चुपचाप-दबे पांव
जिंदगी में, इतनी मिठ्ठास भर देता,इसका पता भी नहीं चला।

सरिता कपूर,
गाजियाबाद,

शरद ऋतु की रात में

मेरे साथ चांद भी
कपकपाया सा लग रहा था ।
करने को मौसम का सामना
बादलों की चादर में छिप रहा था ।।
खुली खिड़की से आती हवा के झोंके ने जब मुझे थरथराया

झांका उस पार
तो खुद को विस्मित मैंने पाया
ना सिर पर छत ना तन पर कपड़े
क्या यह लौह निर्मित इंसान है?
हां , यह लौह निर्मित ही है ।
परिस्थितियों की अग्नि मनुष्य को
हर रूप में ढाल देती है
प्रकृति जीवन को खुले आसमान के नीचे भी पाल लेती है ।।
स्वरचित तथा मौलिक रचना है

भावना श्रीवास्तव
प्रयागराज

'रोशनी का पर्व'

दीप ज्योतित हुए, फैला उजियारा जग।
रात तारों भरी, चाँदनीमय सुभग ।।

कार्तिक की अमावस्या दीपावली
लक्ष्मी जी मनाते कमल की कली
खील संग हो बताशे मिठ्ठाई लगे
भाग्य सौभाग्य पूजे मिले उसको नग

दीप ज्योतित हुए फैला उजियारा जग...

रोशनी की लड़ी जब घरों में सजी
गूँज मंगल ध्वनि मानो लगने बजी
दिव्यता का अनोखा असर सा हुआ
रक्त चंदन बनाते, लगन शुभता पग

दीप ज्योतित हुए, फैला उजियारा जग...

दीप माटी स्वदेशी हुयी भावना
द्वार सजती रंगोली हुयी पावना
प्रेम बढ़ता परस्पर दिनों दिन यहाँ
आम्र पत्तों से वन्दनवारे सजग

दीप ज्योतित हुए,फैला उजियारा जग....

छाया सक्सेना प्रभु
जबलपुर (म.प्र.)

नया साल

नया साल आया कुछ नया काम कीजिए
माफी मांग लीजिए या माफ़ कर दीजिए।

बरसों से रिश्तों पर, चढ़ी हुई धूल जो है
अब उस धूल को तो साफ कर दीजिए।

छोटी सी जिंदगी और वक्त का अभाव यहां
जिंदगी का हर पल खास कर दीजिए।

अपनों के दिए पीर चुभते रहे हैं सदा
आज उन अपनो को माफ कर दीजिए।

लाल हरे चेहरा पे, खुशीया ना दिख पाए
मुखडे पे उज्जल मुस्कान भर लीजिए।

सुनीता मिश्रा

बीता साल कुछ ख्याब तोड़ गया

बीता साल कुछ ख्याब तोड़ गया कुछ पूरे भी कर गया।
ज़ख्म दिए मगर हौंसले मज़बूत कर गया।।

हँसी आँसू कसी खुशियाँ दे गया।
उम्मीदों से भरा साल बहुत कुछ सीखा गया।
किसको अपनाना है।
किस से दूर रहना है बता गया।।

कुछ सपनो का उजाला।
कुछ यादों की चादर
देकर यूं ही गुज़र गया।।

कुछ बातें रह गयी अनकही।
कुछ सपने अधूरे रह गए।
कुछ लोग पास आये फिर जाने क्यों दूर हो गए।

बीते साल की कुक खट्टी मीङ्गी यादें
दिल मे सँजो के रख लेना।

नया साल नई शरुआत नई उम्मीदे लेकर आ गया।
चलो खुद पे भरोसा कर के आगे बढ़ने का वादा करें।।

2026 नई खुशियों की किताब खोलने को हैं।
हर पन्ने पर खुशियाँ बिखरी हैं।

इन खुशियों को अपने आँचल में समेट कर।
सब को खुशियाँ बांटे

एक बार फिर से मुस्कुराने की वजह लेकर नया साल आने को आतुर है
नाइ सुबह होगी।
नाइ रोशनी होगी।

अपने सभी साथियों को एक संदेश देना चाहती हूँ
हर मुस्कुराने की वजह ढूंढना खुश रहना।

कुछ ही दूरी से नया साल दस्तक दे रहा है।
आगे बढ़कर स्वागत करें खुश रहे मस्त रहे।।
जो बीत गया उसे छोफ दे। आने वाले समय के लिये सपने बुने।।
मुबारक मुबारक़ मुबारक़।। 2026 मुबारक

अफ़रोज़ अज़ीज़
दिल्ली इकाई।।

बीता वर्ष

भोर के सूर्य की स्वर्णिम लालिमा है मिटाती ,
निशा के अंधकार को जब करके आह्वान ,
इंतजार है झिङ्गुरती रातों में उन क्षणों का ,
जो करती सहर्ष आलिंगन ऊषा काल का ।

सफलता-असफलता , पाना-खोना--एक दूसरे के,
डोर पकड़कर ही पाने में तसल्ली देता ,
यह अभिलाषा ही पूर्ण हो शिखर तक पहुंचाती ,
लेकर हाथ मशाल चीर अंधकार का मस्तक,
नत मस्तक हो आगे बढ़ना,सपनों को साकार बनाना।

यही लालसा आशा बन झांके रात्रि के अंधकार ,
के पार जहां स्वर्णिम रेखा से हो नया सवेरा ,
कांटों के भय को दूर भगा करना पुष्पों का स्पर्श,
जिसे देख हुआ बगीचे का सौंदर्य भान जीवन में ।
फिर से भोर की उस स्वर्णिम लालिमा की किरणें ,
जिज्ञासा बनी जिंदगी के हर नव वर्ष के ,
नये सवेरे के हर पन्ने को पढ़ना होगा ,
हर पल पूर्ण मनोरथ करना होगा ।

निज अनुभवों के हर बीतते पल को विदा कर ,
नयी आशाओं और सपनों को लेकर आने वाले ,
नव वर्ष के नये सवेरे का स्वागत करने ,
शंख ध्वनि से बाहर आ खुले आकाश में ,
नये क्षितिज के भोर की सूर्य रश्मियों को देख ,
नये संकल्प लेकर आगे बढ़ना होगा,बढ़ना होगा ।

सरिता कपूर

स्वागत है नव वर्ष

स्वागत है नव वर्ष, सभी कर रहे हर्ष।
अभिनंदन करके, खुशियाँ मनाइए।।

सपने सभी साकार,उनको देके आकार।
जग में नाम करके, भविष्य बनाइए।।

मिलजुल सभी रहें, मधुरम वाणी कहें ।
प्रेम की सरिता बहा, नेह को बढ़ाइए।।

नव वर्ष लेके आया,खुशियाँ हजार लाया।
सुख- दुख मिल बाँटें,कसम ये खाइए।

दंभ-द्वेष छोड़कर, भेदभाव भूल कर।
प्रेम से सबको तुम,गले से लगाइए।।

दिसंबर विदा हुआ,नव वर्ष आया हुआ।
देके शुभकामनाएँ,गीत सभी गाइए।।

सुषमा सिंह उर्मि

हौसलों की उड़ान

मंजिल को पाना है तो, निकल सफर पर,
कङ्गिन होगी राह, कांटों भरी,
पैरों में छाले होंगे,
मगर ये दिन ही तुझे, सँवारने वाले होंगे।।

थक कर बैङ्ग मत जाना,
कट गया थोड़ा सफर,
थोड़ा अभी बाकी है,
सूरज ढला गया तो क्या,
तेरे अंदर का उजाला काफी है।।

मंजिल पुकारती है उसे, जो गिरकर संभलना जानता है,
जो अपनी मेहनत की आग में,
लोहे की तरह ढलना जानता है।।

ना लहरों का खौफ कर,
ना तूफानों से डर,
किस्मत के पन्नों पर,
हौसलों की स्याही से लिख,
बस उड़ान ऊंची भर,
और खुद पर यकीन रख।।

जब मंजिल नजर आएगी,
तब ये मंजर निराला होगा,
तेरी कामयाबी के शोर में,
शामिल सारा ज़माना होगा।।

मंजिल दूर सही,
पर नामुमकिन तो नहीं,
बस चलते रहना निरंतर, बैङ्गना तेरी फितरत में नहीं,
चलते रहना निरंतर,
हारना तेरी फितरत में नहीं।।

नीता शर्मा
शिलांग, मेघालय

ऐ जाते हुए वर्ष

ऐ जाते हुए वर्ष
तू केवल समय का
एक रेखा ही नहीं था
तू मेरी साँसों में बसा
अनकहा सा एहसास था ।
तूने हर दिन मुझे
कुछ न कुछ दिया ही है
कभी हौसलों की धूप
कभी आँखों का सिला
कुछ सपने तेरे साथ चले
कुछ ने बीच में ही दम तोड़ दिया
पर जो टूटे , बिखरे थे
वही मुझे गढ़ गए।

तेरे सन्नाटों ने
मुझे खुद से मिलाया
और तेरी भीड़ ने मुझे
तन्हाई का महत्व समझाया ।

कुछ रिश्ते करीब आए
और कुछ दूर हुए
कुछ ऊँचाइयों को छूकर
जमाने में मशहूर हुए
अब जब कि तू विदा ले रहा है
तो मन में कोई शोर नहीं
बस एक शांत सा धन्यवाद है
पर आँखों में है नमी बनी
जा वर्ष तुझे मेरा प्रणाम है
नए सवेरा जब आएगा
हम उसके स्वागत में पलके बिछाएंगे
पर तुझसे मिले हर अनुभव को
हम अपने शब्दों में सजाएंगे....

अर्चना झा अन्नू
दिल्ली

नव वर्ष आया द्वार पे

नव वर्ष आया द्वार पे
आशा की चादर ओढ़कर।
बीते दुखों छोड़कर
बंधन कटीले तोड़कर।।

हर दिन जगे विश्वास ऐसा,
भोर होवे प्रेममय ।
जीवन पथिक बनते हुए

होगी सदा जय की विजय ।।

उम्मीद की डोरी पकड़
हाथों में थामें फूल को।
पहला कदम रखते ही जागे
भूलिए मत मूल को ।।

तय किया जब लक्ष्य पाना
वर्ष नव उत्कर्ष हो ।
गूँजती मंगल ध्वनि तो
क्यों न सबको हर्ष हो।।

छाया सक्सेना प्रभु
जबलपुर (म.प्र.)

शहर समता
शहर समता

शहर समता - ब्यूरो प्रमुख

देहरादून ब्यूरो - निशा अतुल्य,
सतना ब्यूरो - डॉ ऊषा सक्सेना,
रीवां ब्यूरो - साधना तिवारी,
लखनऊ ब्यूरो - मंजु सक्सेना,
जबलपुर ब्यूरो - शैली सेठ,
लुधियाना ब्यूरो - श्रद्धा शुक्ला,
जौनपुर ब्यूरो - डॉ मधु पाठक,
हैदराबाद ब्यूरो -रीना प्रदीप कुमार,
भिलाई ब्यूरो - संध्या चंदेल,
गोरखपुर ब्यूरो - चित्रा श्रीवास्तव,
दिल्ली ब्यूरो - अफरोज़ अजीज,
तिनसुकिया गोलाघाट ब्यूरो - रंजना बिनानी,
प्रयागराज ब्यूरो - डॉ आकांक्षा पाल,
भीलवाड़ा ब्यूरो - डॉ राजमति पोखरना,
इंदौर ब्यूरो - आशा जाकड़,
शिलांग ब्यूरो - डॉ अनीता पंडा,
बिलासपुर ब्यूरो - स्मृति मिश्रा 'रीति,
रायपुर ब्यूरो - सीमा निगम,
कानपुर ब्यूरो - सीमा वर्णिका,
भोपाल ब्यूरो - दीपमाला तिवारी,
दमोह ब्यूरो- भावना शिवहरे,
मण्डला ब्यूरो - डॉ अर्चना जैन
बनारस ब्यूरो - सुनीता जौहरी,
आरा ब्यूरो - सिम्पल सिंह,
बिजनौर ब्यूरो - ऋतुबाला रस्तोगी,
पठानकोट ब्यूरो - क्षमा लाल गुप्ता,
सप्तरी नेपाल ब्यूरो - करुणा झा,
धम्तरी ब्यूरो - कामिनी कौशिक,
रामपुर ब्यूरो - चंद्रिका कुमार 'चांदनी',,
मुरादाबाद ब्यूरो - अभिव्यक्ति सिन्हा,
कटनी ब्यूरो - मीरा भार्गव,
पटना ब्यूरो - अंजू भारती

संस्थापक

स्व0 कन्हैया लाल, स्व0 साधना श्रीवास्तव

सम्पादक
उमेश चन्द्र श्रीवास्तव
आरएनआई नं0 UPHIN/2001/3996

उप संपादक
डा0 अरूण कुमार मिश्रा
रचना सक्सेना

Mo. 9005239332
Email-shaharsamta@gmail.com

स्वत्वाधिकारी/मुद्रक/प्रकाशक/सम्पादक उमेश चन्द्र श्रीवास्तव द्वारा इण्डियन प्रेस (पलि.) प्रा0लि0, 36 पन्ना लाल रोड, इलाहाबाद से मुद्रित कराकर 289/238ए, (अनन्त भवन) कर्नलगंज, इलाहाबाद से प्रकाशित।

इस अंक के प्रकाशित समस्त समाचारों के चयन एवं सम्पादन हेतु पी.आर.बी. एक्ट के अन्तर्गत उत्तरदायी तथा समस्त विवादों का निपटारा इलाहाबाद न्यायालय में ही होगा।